بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा ०३ जनवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

वक़्फ़े जदीद के सतासठ्वें (67वाँ) वर्ष में जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली क़ुरबानियों का वर्णन तथा अड़सठवें (68वाँ) साल के प्रारम्भ होने की घोषणा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-03.01.2025
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा एवं सूरः आले-इमरान की आयत संख्या 93 की तिलावत के बाद इस आयत का अनुवाद बयान करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- तुम नेकी को कदाचित नहीं पा सकते जब तक अपनी मन भावन वस्तुओं में से ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च न करो, और जो कोई चीज़ भी तुम ख़र्च करो, अल्लाह उसे ख़ूब जनता है। फ़रमाया- एक वास्तविक मोमिन जो अल्लाह तआला की राह की तलाश में रहता है, उसे उन राहों की खोज करते रहना चाहिए जो ख़ुदा तआला की निकटता पाने की रहें हैं। अल्लाह तआला की राह में धन उपयोग में लाने को भी ख़ुदा तआला ने एक नेकी फ़रमाया है, इस आयत में भी यही विषय है कि वह धन जिससे तुम प्रेम करते हो, यदि वह ख़ुदा की राह में ख़र्च करोगे तो तब यह बड़ी नेकी होगी। निःसन्देह अल्लाह तआला हर एक नेकी का बदला देता है, परन्तु इंसान को क्यूँकि धन का मोह होता है इस लिए इसकी ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत के बारे में फ़रमाया कि धन से मोह नहीं लगाना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम कदापि नेकी को नहीं पा सकते जब तक उन चीज़ों में से अल्लाह की राह में ख़र्च न करो जिन से तुम प्यार करते हो। अगर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के साथ इस ज़माने का मुक़ाबला किया जाए तो खेद होता है, क्यूँकि

प्राणों से बढ़ कर कोई वस्तु प्यारी नहीं होती और उस ज़माने में प्राण ही देने पड़ते थे। तुम्हारी तरह वे भी पत्नी और बच्चे रखते थे, जान सबको प्यारी लगती है, किन्तु वे सदा इस बात का चाव रखते थे कि अवसर मिले तो अल्लाह तआला की राह में जान क़ुर्बान कर दें। हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया- व्यर्थ और तुच्छ चीज़ों को ख़र्च करने पर कोई इन्सान नेकी का दावा नहीं कर सकता, नेकी का द्वार संकीर्ण है, अतः यह बात मस्तिष्क में बिठा लो कि तुच्छ चीज़ों के ख़र्च करने से कोई उसमें दाख़िल नहीं हो सकता, क्यूँकि स्पष्ट आयत है कि لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ अर्थात- जब तक अति मनमोहक एवं प्रिय से प्रियतम चीज़ को ख़र्च नहीं करोगे, उस समय तक प्यारा एवं प्रिय होने का स्तर नहीं मिल सकता। आप अलै. फ़रमाते हैं कि क्या सहाबा किराम रज़ी. मुफ़्त में इस स्तर को पहुँच गए? सांसारिक पदों को प्राप्त करने के लिए कितने अधिक ख़र्चे और परिश्रम सहन करने पड़ते हैं तब कहीं जाकर एक तुच्छ पदवी, जिससे मन को शान्ति एवं संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती, मिलती है। फिर ख़याल करो कि रज़िअल्लहु अन्हुम का पद जो दिल की शान्ति, मन का संतोष एवं मोलाए करीम के प्रसन्न होने का निशान है, यूं ही सरलता पूर्वक मिल गया? फ़रमाया- ख़ुदा ठगा नहीं जा सकता, मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह की खुशी पाने के लिए कष्टों की चिन्ता न करें, क्यूँकि स्थाई ख़ुशी और सदेव के आराम की रोशनी इस अस्थाई कष्ट के बाद मोमिन को मिलती है। दुनिया में इंसान धन से अत्यधिक लगाओ रखता है इसी कारण से स्वप्नफल की विद्या में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सपने में देखे कि उसने जिगर निकाल कर किसी को दिया है तो उसका मतलब धन है।

आज अहमदिय्या जमाअत के लोगों ने इस बात को भली भाँती समझ लिया है कि वास्तविक नेकी तक पहुँचने के लिए इस धन को ख़र्च करना अनिवार्य है, जो प्रियतम चीज़ है। यह निःसन्देह हज़रत मसीह मौऊद अलै. की तरबियत का प्रभाव है कि आज तक यह बलिदान के स्तर हम देखते चले जा रहे हैं, वे स्तर जो सहाबियों रज़ी. ने स्थापित किए और फिर जिनको हज़रत मसीह मौऊद अलै. के ज़माने में आपके सहाबा रज़ी. ने क़ायम किया। फिर इसके बाद ख़िलाफ़त के हर दौर में ये कुर्बानियां हम देखते चले आ रहे हैं, आज तक यही कुर्बानियां हमें नज़र आ रही हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- मैं निःसन्देह जनता हूँ कि कंजूसी और ईमान एक दिल में जमा नहीं हो सकते.....क़ौम को चाहिए कि हर तरह से इस सिलसिले की सेवा में लगी रहे, धन देकर भी सेवा करने से पीछे नहीं हटना चाहिए। देखो! दुनिया में कोई सिलसिला चन्दे के बिना नहीं चलता.....सब रसूलों के युग में चन्दे जमा किये गए। अतः हमारी जमाअत के लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यदि ये लोग जतन करके एक एक पैसा भी साल भर में दें तो बहुत कुछ हो सकता है। इस हवाले से हुज़ूरे अनवर ने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के बलिदानों के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलै. के कुछ कथन पेश फ़रमाए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने एक अवसर पर हुज़ूर अलै. को लिखा कि हज़रत पीर व मुर्शद! मैं सम्पूर्ण

विनयता के साथ निवेदन करता हूँ कि मेरी पूरी धन सम्पत्ति यदि दीन के प्रकाशन में लग जाए तो मैं सफल हो जाऊंगा।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी. ने जब वक़फ़े जदीद और तहरीके जदीद की प्रेरणा दी तो कुछ निर्धन लोगों ने थोड़ी थोड़ी धन राशि पेश की, कोई मुर्गा ले आया, कोई अंडा ले आया, कि हमारे पास जो कुछ था हमने पेश कर दिया। इसी के अंतर्गत हुज़ूरे अनवर ने हज़रत खलीफ़ा रशीदुद्दीन साहब रज़ी. के आर्थिक सहयोग का विस्तारण बयान फ़रमाया तथा सहाबियों एवं बज़ुर्गों की कुछ बातें पेश करने के बाद फ़रमाया कि आज भी हमें ये नमूने हर जगह मिलते हैं। यह रूह हमें आज भी अहमदियों में नज़र आती है। इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने मार्शल आई लैंड्स, क़ज़ाकिस्तान, केमरोन, नाइजेरिया, गैम्बिया, तंज़ानिया, चेक रिपब्लिक इत्यादि देशों में घटित कुछ क़ुर्बानी के वृत्तांत पेश फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया इन्डिया से वहां के इन्सपैकटर साहब लिखते हैं कि एक दोस्त हैं, उनका वक़फ़े जदीद का चन्दा चौबीस हज़ार था, कुछ ही दिन शेष थे उनके पास, कुछ धन राशि उनके पास थी जो एक महत्त्व पूर्ण दीन के काम में देनी थी। उन्होंने अल्लाह पर भरोसा करते हुए वह धन राशि चन्दे में दे दी। दूसरे दिन ही उन महोदय को व्यापार की एक बहुत बड़ी धन राशि, जो कहीं फंसी हुई थी वह अचानक मिल गई, तो अल्लाह तआला ने, देखें! उसको कहा कि अच्छा तुम मेरे लिए धन के मोह को छोड़ रहे हो और निजी आवश्यकताओं को त्याग रहे हो, जमाअत की आवश्यकताओं को पूरा करने की चेष्टा कर रहे हो, तो मैं तुम्हारी मदद करता हूँ। तो इस प्रकार अल्लाह तआला सहायता करता है। जमाअत के जो भी ख़र्चे हो रहे हैं, हमारे दुनिया में जो मिशन हैं, तहरीक ए जदीद और वक्फ़ जदीद के चन्दे ही हैं, जो शुद्ध रूप में केंद्र को आते हैं, शेष तो स्थानीय देशों में ही ख़र्च हो जाता है। ये सब ख़र्च इन्हीं चन्दों से हो रहे हैं। अफ़्रीक़ी देशों में जहाँ निर्धनता एक सामान्य बात है, यद्यपि वे चन्दे देते हैं परन्तु वहां मस्जिदें हैं, मिशन हैं, उनको चलाने के लिए धन चाहिए होता है। अफ़्रीक़ा में इस समय 7953 मस्जिदें बन चुकी हैं और 306 मस्जिदें निर्माणाधीन हैं। 1860 मिशन हाउसिज़ काम कर रहे हैं। चार सौ मर्कज़ी मुबल्लिग़ तथा दो हज़ार से अधिक मुअल्लिम काम कर रहे हैं। इसी तरह क़ादियन, साउथ अमरीका, जज़ायर इत्यादि देशों में धन ख़र्च होता है। लिट्रेचर के प्रकाशन तथा वितरण पर व्यय होता है, ये सारे ख़र्चे अल्लाह तआला अपनी कृपा से पूरे करता है।

अल्लाह ताआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. को यही फ़रमाया था कि धन तो मैं तुम्हें दूंगा और उस वादे के अनुसार धन दे भी रहा है। अल्लाह तआला जमाअत को सामर्थ्य प्रदान करे कि हम इस धन का सदुपयोग भी कर सकें, अल्लाह तआला सही ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे, कभी इसमें कोई अनियमिता न हो। हुज़ूरे अनवर ने वक़फ़े जदीद के साल की पिछली रिपोर्ट के हवाले से फ़रमाया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वक़फ़े जदीद का 67वां साल पूरा हुआ है। इस वर्ष में विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत को ख़ुदा तआला के समक्ष एक करोड़ छत्तीस लाख इक्यासी हज़ार पौंड अर्थात लगभग 14 मिलयन की माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। यह

वसूली गतवर्ष की तुलना में सात लाख छत्तीस हज़ार पौंड अधिक है और इसमें शामिल होने वालों की संख्या 15 लाख 51 हज़ार है, अलहम्दुलिल्लाह।

वसूली की दृष्टि से पहली दस जमातें- बर्तानिया, केनेडा, जर्मनी, अमरीका, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, बेल्जियम। शामिल होने वालों की वृद्धि की दृष्टि से विशिष्ट जमाअतें- पाकिस्तान, नाईजेरिया, केमरून, गेम्बिया, कोंगो ब्राज़वेल।

भारत के प्रथम दस प्रदेश- केरला, तमिलनाडु, जम्मू एंड कश्मीर, कर्नाटक, तिलंगाना, ओडीशा, पंजाब, वेस्ट बंगाल, महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश। भारत की पहली दस जमाअतें- कोइम्बतूर, क़ादियान, हैद्राबाद, कालीकट, मंजेरी, बंगलौर, मल्या प्ल्यालम, कोलकता, केरंग तथा केरोलाई।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला क़ुर्बानी करने वालों के जान और माल में अत्यधिक बरकतें अता फ़रमाए। नव वर्ष के विषय में दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया, दुआएं करें कि यह 2025 का साल जमात के लिए बरकतों वाला साल हो। अल्लाह तआला जमाअत को हर एक उपद्रव से सुरक्षित रखे। पाकिस्तान में कट्टर पंथियों के दल हैं जो हर तरह का अत्याचार करने का प्रयास करते रहते हैं। अल्लाह तआला इन दुष्टों की पकड़ के जल्दी सामान फ़रमाए, अहमदियों को अपने शरण में रखे। रबवा पर भी इन लोगों की बड़ी नज़र रहती है, उसकी रक्षा भी अल्लाह तआला फ़रमाता रहे, और फ़रमाया- दरूद शरीफ़ तथा कुछ अन्य दुआओं की ओर मैंने कुछ समय पहले ध्यान दिलवाया था, इसी तरह पाकिस्तान, बंगला देश, शाम एवं अफ़्रीक़ा तथा अन्य देश हैं, हर एक देश में अल्लाह तआला अहमदियों को अपनी सुरक्षा में रखे। हर एक अहमदी का कर्तव्य है कि इसके लिए विशेष रूप से स्वयं भी बहुत दुआएं करें, अपने देशों के लिए भी और दुनिया की सामान्य स्थिति और युद्धों की परिस्थितियों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके बुरे प्रभाव से हर निर्दोष एवं पीड़ित को बचाए।

ये लोग नव वर्ष पर बड़े आयोजन करते हैं लेकिन प्रत्येक केवल अपनी खुशियाँ देखता है, दूसरों की पीड़ा का इन्हें एहसास नहीं है। शक्ति शाली क़ौमें, ग़रीब क़ौमों तथा पीड़ित लोगों पर अत्याचार करती चली जा रही हैं। अल्लाह तआला इस वर्ष में उन सब शक्तियों की योजानएं ध्वस्त कर दे और अल्लाह तआला की वहदानियत को हम दुनिया में क़ायम होता देखें, अल्लाह तआला हमें भी इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔